‘माँ’ से माइकल

मेरा यानी डेबोरा फैल्प्स का तीसरा बच्चा माइकल पहले दिन से ही आम बच्चों से कहीं बड़ा था। पैदा हुआ तो उसका वज़न लगभग 4 किलो 300 ग्राम था और लम्बाई थी 23 इंच। छुटपन से ही मुझसे लाखों सवाल पूछने लगा था। सबका ध्यान उसी की ओर रहे इसका वो पूरा-पूरा ख्याल रखता। कभी अपनी तीन-पहिया साइकल पर झूलता, कभी कसरत वाले खम्बे पर लटकता, उलटबाज़ियाँ लगाता। हर वक्त कोई न कोई खुराफात।

उसके स्कूल जाने के साथ ही टीचरों की शिकायतें आना शुरू हो गईं। “चुपचाप नहीं बैठता, टिक कर कुछ नहीं करता, हर कभी खी..खी..करने लाता हँसता रहता है। इसके हाथ तो जैसे इसके पास रहते ही नहीं। बच्चों को कोहनी मार-मारकर उनका ध्यान अपनी ओर लगाए रहता है।”

जब थोड़ा और बड़ा हुआ तो माइकल के नए स्कूल की नई टीचरों के पैगाम आने लगे। “बड़ा ही बचकाना बर्ताव है इसका। किसी भी चीज़ में इसका ध्यान ही नहीं लगता।” मैं खुद टीचर हूँ और पिछले 22 सालों से पढ़ा रही हूँ। मुझे लगा कि इसका कारण कुछ और भी हो सकता है। जैसे अभी-अभी हम नई जगह में आए हैं और यहाँ वही सब पढ़ाया जा रहा है जो माइकल पहले ही पढ़ चुका है। हो सकता है, क्लास में वो बोर हो जाता हो। मैंने यह बात उसकी टीचर को बताई। इस पर टीचर बोली, “ओह, वो इतना भी अक्लमन्द नहीं! तुम्हारा बेटा, कभी भी किसी भी चीज़ पर ध्यान लगा ही नहीं सकता।” यह बात ना मैंने कभी मानी और ना ही कभी भूली।

मिडिल स्कूल तक आते-आते माइकल को उन सब कामों में बड़ा मज़ा आने लगा था जिनमें हाथों से कुछ करने को था। जैसे- विज्ञान के प्रयोग। जिमनास्टिक्स भी उसे बहुत पसन्द था। इनमें उसने तरक्की भी खूब की। हाँ, पढ़ना उसे बहुत अच्छा नहीं लगता था। इसलिए मैंने उसे *बाल्टिमोर सन स्पोर्ट्स* के पन्ने देने शुरू किए। चाहे वो उसके केवल चित्र देखता और उसके साथ लिखीं दो-चार लाइनें ही पढ़ता था। स्कूल में उसे कुछ B, कुछ C और कुछ D ग्रेड मिलते थे।

वो बड़ा मुश्किल समय था। मेरा तलाक हो रहा था। मैं पढ़ाई भी कर रही थी। और माइकल बड़ा हो रहा था। हाँ, कुछ अजीबोगरीब तरीके से। उसके कान खूब बड़े लगते और वो दौड़ता तो उसके हाथ घुटनों से नीचे लटकते। आज वो 6 फीट 4 इंच का है और हाथ फैलाए तो उनके बीच की दूरी 6 फीट 7 इंच होती है। बच्चे उसका मज़ाक बनाते।

जब वो पाँचवीं में था तो मेरे एक दोस्त डॉक्टर वैक्स ने कहा कि हो सकता है माइकल में कोई गड़बड़ी हो जिसकी वजह से वो किसी चीज़ में थोड़ी देर के लिए ही ध्यान लगा पाता है और बेहद चंचल है। इस बीमारी का नाम उन्होंने ADHD बताया। टीचर भी इस बात को झट से मान गए।

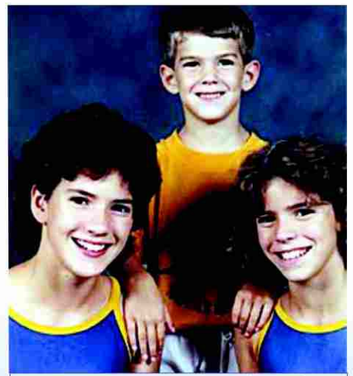

माइकल अपनी बहनों हिलैरी और विटनी के साथ (1988)

अब तक मेरे परिवार के सभी लोग तैरने में मज़ा लेने लगे थे। मेरी बड़ी बेटी अच्छी तैराक थी। डॉ. वैक्स के बच्चे भी तैरने जाते थे। माइकल स्विमिंग पूल के आसपास यूँ ही दौड़-बदमाशी में लगा रहता।

नौ साल की उम्र से उसे काबू में रखने के लिए दवा देनी शुरू की गई। इसका असर दिखा। अब वो बहुत ज़्यादा हिले-डुले बगैर अपना होमवर्क कर लेता था। उसे कुछ C ग्रेड B ग्रेड बनने लगे थे। लेकिन इतना तो अब भी था कि अगर उसे कम से कम चार वाक्य लिखने को कहा जाता तो वो चार ही वाक्य लिखता।

दो साल बीत गए। माइकल ने कहा, “अब मैं दवा नहीं लेना चाहता। मेरे दोस्त ऐसा नहीं करते। और मैं भी बिना दवा के अपना ध्यान लगा सकता हूँ।” मेरे घर में बच्चों के निर्णयों को माना जाता है। मैंने माइकल की बात मान ली।

अब तक माइकल की तैराकी का हुनर दिखने लगा था। उसका देश में 10वाँ स्थान था। मैं देखती कि जो बच्चा स्कूल का काम पूरा करने के लिए मुश्किल से बैठ पाता था, अब तैरने की पाँच मिनट की प्रतियोगिता के लिए चार घण्टों तक एक ही जगह पर बैठा रहता।

माइकल जब 11 साल का हुआ तो उसके तैराकी के कोच बॉब बोमैन बोले, “मैं देख सकता हूँ कि सन 2000 तक माइकल ऑलम्पिक में प्रवेश पाने की कोशिश करेगा। 2004 में वो ऑलम्पिक में भाग लेगा। 2008 तक कई वर्ल्ड रिकॉर्ड बना चुका होगा। 2012 ऑलम्पिक जो लन्दन में होगा उसमें...।” मैंने कहा, “बॉब बहुत हुआ। अब लौट चलो। अभी तो वो सिर्फ 11 साल का है। मिडिल स्कूल में है।”

अब मैं देखती हूँ तो पाती हूँ कि माइकल कोच की भविष्यवाणी से भी तेज़ चला। 15 साल की उम्र में उसने ऑलम्पिक में भाग लिया। 16 साल में पहला वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। 19 साल में 2004 ऑलम्पिक में 8 पदक जीते – जिसमें 6 सोने के थे।

जो बात मुझे सबसे ज़्यादा चकित करती है वो है माइकल का घड़ी जैसा दिमाग। अगर उसे 200 बटरफ्लाई करने हैं तो उसे पता होता है कि रिकॉर्ड तोड़ने के लिए उसे पहले 50 बटरफ्लाई 24.6 सेकण्ड में करने होंगे। और वो इस समय को जैसे दिमाग में सैट कर लेता है। और अपने शरीर से यह काम ठीक 24.6 सेकण्ड में करवा लेता है।

माइकल ने तैराकी का अपना होमवर्क हमेशा पूरा किया। हाई स्कूल में वो रात का खाना टीवी के सामने ही खाता। इस समय वो अन्तर्राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिताओं के टेप देख अपनी खामियाँ ढूँढ रहा होता था।

खैर, ये सारी बातें तो बीते दिनों की हैं। न जाने कितने ही लोगों ने वो सब देखा जो मेरा बेटा नहीं कर सकता था। आज सारा संसार वो सब देख रहा हो जो ADHD से पीड़ित मेरा बेटा कर रहा है।

साभारः न्यू यॉर्क टाइम्स, चित्रः इंटरनेट